।। श्री दुर्गा साक्षात्कार चर्चिका - स्तवः ।।

श्री श्री श्री श्री श्री १०००८ स्वामी शिशू सत्यविदेहानंद सरस्वती विरचित
।। श्री दुर्गा साक्षात्कार चर्चिका - स्तवः ।।
हे माँ दुर्गे आप के चरण कमल हमारे ह्रदय में रहें,
आप हमारे मानस में नित्य बसो ।
हे माँ दुर्गे
दया करो,
क्षमा करो,
कृपा करो,
ममता करो,
करूणा करो,
रक्षा करो,
छोटी कन्या बनकर हमारे साथ खेला करो ।।
मंत्र - ॐ ह्री श्रीं दुं दुर्गे चरणम् शरणम् मम्

ॐ दुर्गे सुनो मेरी पुकार । सर्व याचना तारणहार ।।
(भावनोपनिषद युक्तः)

गती जीवन नियम संसार । प्राण व्यान अपान उदान समान सार ।।१
जगत मे मै 'मै' हू अहम । कर दु अगर मै को इदम ।।२
सद्गुरु कृपासे ही चले व्यापार । तर जाय जीवन उतरे पार ।।३
त्रिपुटी की समाधि त्रिपुट द्वार । स्थुल, सूक्ष्म, पर शिवयोगी तार ।।४
अन्तर्याग, बहीर्याग, महायाग । उपासना, भावना, साधना त्याग ।।५
कायीक, वाचिक, मानसिक भोग । षट्चक्र, श्रीचक्र, जीवनमुक्ति योग ।।६
श्रीगुरु सर्वकारण भूता शक्ति । तेन नवरन्ध्र रुपो देहा भक्ति ।।७
एक मुख दो श्रोत्र दिव्यौध गुरु । दो चक्षु एक उपस्थ सिधौध गुरु ।।८
दो नासिका एक पायू मानवौध गुरु । सुषुम्ना, अलम्बुसा, वारणा कुहू ।।९
विश्वोदरा, हस्तिजिव्हा, यशोवति इडा । पिंगला, गान्धारी, पूषा यह पिडा ।।१०
शंखीनी, पयास्विनी, सरस्वति नाडी । पराशक्ति कुण्डलीनी ब्रह्मरन्ध्र गाडी ।।११
गुरुपादुका मन्त्र जागरण विद्या । सर्वकारण भूता शक्ति, नवरन्ध्र रुपा ।।१२
गुरुकृपा से होव शिष्य का मलापनोदन । शक्तिपात, षडध्वशोधन सामरस्याभावन ।।१३
त्रैलोक्यमोहनादी आवरण नव । गुरुदेव एवं इष्टदेव मे अभेद-भावना भव ।।१४
ज्ञानेन्द्रिय, कर्मेन्द्रिय पितृ मातृ रुपा । धर्माधि चार पुरुषार्थ चैतन्य कृपा ।।१५

देहास्थित रसरक्त सप्तधातु वृक्ष । मनः संकल्प, त्वचा, रोम श्रीयन्त्र सृक्ष ।।१६
जिव्हा मे आस्वाध मधुरादि षडरस । वसन्तादि षड्ऋतु इंद्रीय दस ।।१७
ज्ञानअर्ध्य, विषय हवि, जिवात्मा होता । ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय अभेद-भावना गोता ।।१८
अणिमा, लधिमा, महिमा, ईशित्व । देह मे स्थित नौ रस कवित्व ।।१९
वशित्व, प्राकम्य, मुक्तिच्छा प्राप्ति । यह दस सिद्धिया सर्वकाम व्याप्ति ।।२०
काम, क्रोधादि षड् रिपु पुण्य पाप । मोहन चक्र मे स्थित ब्रह्मादी अष्टशक्ति ताप ।।२१
शरीर मे नवचक्र नव मुद्राएं । श्री चक्र सहस्त्रार नव निद्राएं ।।२२
पंचमहाभूत पंचकर्मेन्द्रिय पंचज्ञानेन्द्रिय । विकृत मन से युक्त यह सोलह शक्तिया ।।२३
श्री चक्र के सर्व शापापरिपूरक चक्र मे । कामाकर्षिणी सोलह शक्तिया वक्र मे ।।२४
कर्मेन्द्रियो के पांच विषय । त्याग, उदासिन, ग्रहण, बुध्दि, संचय ।।२५
यह आठ वस्तुए श्रीचक्र सर्व संक्षोभण । अनंग - कुसूमादि आठ शक्ति संक्रमण ।।२६
चौदह नाडिया ही श्री चक्र मे । सर्व संक्षोभिण्यादि चौदह शक्तिया वक्र मे ।।२७
प्राणादि पंच-नागादि पंच प्राण दश वायु । सर्वार्थ साधक-बहिर्दशारमे देवता पूजनायू ।।२८
प्राण नाग प्रधान दाशाग्नि पित रुपा । सर्व रक्षाकर चक्र सर्व ज्ञादि शक्तिनृपा ।।२९
शीतोष्ण, सुख दुःखेच्छा, सत्वरजस्तम । सर्व रोगहा वशिनी अष्ट शक्ति सम ।।३०
शद्वादि शरीरस्थ पंचतन्मात्राएं त्रिकोण । सर्व सिद्धिप्रद पुजनिय पंच पुष्प बाण ।।३१
अविकृत मन अम्बा के हाथ मे चक्षु । राग ही पाश है, द्वैष है अंकुश ।।३२
प्रकृति, महतत्व, अहंकार सर्वसिद्धिप्रद चक्र मे ।
पुजनिय है कामेश्वरी, व्रजेश्वरी, भगमालिनी नक्र मे ।।३३
शुद्ध चैतन्य है सर्वानन्दमय चक्र मे बिंदु । कामेश्वर रुप है पुजनिय सिंधु ।।३४
उपाधि विषीष्ट स्वात्मस्वरुप यह तपस्या ।
कामेश्वर अंक मे सदानंद पुर्ण ललिता त्रिपुर सुंदरी उपास्या ।।३५
कामेश्वर - कामेश्वरी के श्वेत रक्त चरण उपास्य है । इन्ही से स्वयं साधक नित्य प्रकास्य है ।।३६
नौ आवरण मे नौ सिद्धि - नौ मुद्रा का होता अर्चन ।
यह नौ मुद्रा - नौ सिद्धि मुझसे अभिन्न है यह अनन्य-चित्तता है पुजन ।।३७
बारम्बार करे आत्मा के साथ अभेद रुप से । ललिताम्बा की भावना पुजाऊपचार धुप से ।।३८
'मै' 'तुम' 'अस्ति' 'नस्ति' 'कर्तव्यम' 'कर्तव्य' ।
'उपास्य' 'संकल्प' 'विकल्प' 'विभावन' 'आत्मा मे होम' 'सव्य' ।।३९
'भावना विषय' में 'अभेद-भावना' 'तर्पण' है ।
'गुरु' से 'यज्ञ' पर्यंत 'पदार्थ' 'स्वात्मात्र' 'अवशेष' 'अर्पण' है ।।४०
श्री चक्र के अन्तास्त्रिकोण मे पुजित । कामेश्वर्यादि पंचदश नित्याएं सृजित ।।४१
प्रतिपदादि पंचदश तिथीयां इनमे । काल के परिणाम का अवलोकन उनमे ।।४२
तिन मुहूर्त - दो मुहूर्त - एक मुहूर्त भी रखे जो ।
स्वात्मविषयीनी - श्वासस्तम्थ सहित निर्विकल्पवृति वो ।।४३

इतर भावनाओसे रहित - धारावाहिक रुप मे ।
आसक्त रहे जिव जीवन मुक्ति फल अधिकारी नृप मे ।।४४
कादिमत से अन्तश्चक्र भावना की प्रतिपादना । होवे वह साधक स्वयं शिवयोगी नित साधना ।।४५
भावना करे नित्य स्वयं ब्रह्म हु मै । विज्ञान, अंतरिक्ष, ऊर्जा शिव हु मै ।।४६
हर समय, नित्य प्रकट मै ब्रह्म । परमाणू हु गुरु कृपा युक्त धन्य ।।४७
मुलाधार से सहस्त्राए की यात्रा । अग्नि मे मिलावे अधिक जल की मात्रा ।।४८
हर श्वास पर रहे मरण हमारा । जिते जी मिले शरण साहारा ।।४९
पद्मासन बैठे-सिद्धासन जोडे । श्वासो को नव उंगल पर तोडे ।।५०
पकड बनाकर वायु नचावे । पृथ्वि तत्व को आकाश उडावे ।।५१
सिद्ध संतो की चरण - धुली । साधन साक्षात्कार म समागम सुली ।।५२
अशाश्वत सुखो की अनाहत चर्चा । श्वेत अश्रुओ से स्वात्मभाव पर्चा ।।५३
आसन, प्रत्याहार, धारणा, समाधि । पंचदश कृत्या नवचक्र उपाधि ।।५४
भगवति दुर्गा का दर्शन - संक्रमण । स्वामी विदेही तुरिय पाद विचरण ।।५५
चतुर्थ पाद मे योग आसक्ति । पंचमकार वाम मार्ग अनासक्ति ।।५६
'तम' से रहे 'दम' मे नित्य । 'णम' को पकडो 'लम' सातत्य ।।५७
'पृथ्वि तत्व' मे शं, सं, हं, लं । 'वायुतत्व' मे यं, रं, कं, दं ।। ५८
'श्वेतेश्वरी' की श्वेत बांसुरी । 'कृष्णेश्वरी' से नव उंगल दुरी ।।५९
'कपाल भांति' का राग गाए । 'उज्जायी' जब कुम्भ मे समाए ।।६०
'अमनी' कर के 'मन' की डोरी । अर्ध पलको मे 'रक्तेश्वरी' छोरी ।।६१
'शितली' शितल ध्यान तुम्हारा । 'निलज्योत' ललिताम्बा त्रिपुरा ।।६२
'अनुलोम-विलोम' जब गति बढाएं । 'शितली' निल ज्योत जलाएं ।।६३
करना सिर्फ तुम मनका निग्रह । मनन मे रहे 'जगदम्ब' वििग्रह ।।६४
'सोहम' घोष पुरश्चरण संशय । 'गायत्री' गय त्रण निश्चय ।।६५
'विवाह' कर लो 'दाह' करके । जब 'वधु' मिले मल प्रवाह करके ।६६
'समधि' मे दृष्टि लगे समाधि । बंधन त्रय 'संशय' जगे तब भी ।।६७
साक्षात्कार चर्चिका रहे जगत मे चर्चित ।
'अग्नि' मे करना होगा 'जल' मे भिगकर तन सर्मपित ।।६८
यदि अब भी है मन मे आवरण 'बंध' का भव ।
उस 'भव' मे तपाओ, गाओ जीवनमुक्ति का स्तव ।।६९
'जागरण' के समय सोए तुम्हारा जब साक्षात्कार ।
'अनहत' सुनकर विवस्त्र बनाना चर्चित बालात्कार ।।७०
यही सद्सद्गुरु की सम्भालेगी तुम्हे 'त्रिपुटी' ।
ध्याता-ध्येय-ध्यान कि समाहित श्री चक्र मे 'त्रिकुटी' ।।७१

'सोहम' गान गाता रहे, दे दे तुम्हे वरदान तथास्तु ।
'अहम-ब्रह्मास्मी' का अहम स्वामी विदेही शिवयोगी कहता तुम्हे तसाच - तु ।।७२

इति श्री दुर्गा साक्षात्कार चर्चिका स्तव स्तोत्रम् सम्पुर्णम्
।। ॐ सुश्री दुं दुर्गार्पण मस्तु ।।